शिक्षाचार्य निर्देशिका

प्रवेश—

१–शिक्षाचार्य (एम० एड०) कक्षा में प्रवेश, प्रवेश-परीक्षा में प्राप्त योग्यता के आधार पर होगा। प्रवेश परीक्षा का समय विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित होगा।

२–शिक्षाचार्य में प्रवेशार्थ निम्नलिखित अर्हता होनी चाहिए।

(क) किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर उपाधि।

(ख) किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की बी० एड० अथवा शिक्षाशास्त्री (बी० एड०) उपाधि।

अथवा

(ग) उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित एल० टी० परीक्षा उत्तीर्ण।

३–शिक्षाचार्य कक्षा में कुल २५ स्थान निर्धारित हैं।

४–शिक्षाचार्य परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित शर्तें अनिवार्य हैं।

(क) इस विश्वविद्यालय में एक शैक्षणिक सत्र तक शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम का नियमित रूप से अध्ययन।

(ख) कक्षा में कम से कम ७५ प्रतिशत उपस्थिति।

(ग) शैक्षणिक सत्र में समय से शुल्क का भुगतान एवं उत्तम आचरण।

५–इस पाठ्यक्रम में कुल ५ लिखित प्रश्नपत्र होंगे जिनमें ४ अनिवार्य हैं तथा एक वैकल्पिक। प्रत्येक प्रश्नपत्र १०० अंक का होगा। प्रत्येक छात्र की एक मौखिक परीक्षा १०० अंक की होगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक छात्र को १०० अंक का लघुशोध प्रबन्ध तैयार करना होगा। इस प्रकार शिक्षाचार्य परीक्षा में कुल ७०० अंक होंगे।

उत्तीर्णता के लिए केवल दो ही श्रेणियाँ होंगी—

प्रथम श्रेणी—६० प्रतिशत या अधिक।

द्वितीय श्रेणी—४८ प्रतिशत या अधिक किन्तु ६० प्रतिशत से कम किन्तु परीक्षा में उत्तीर्णता के लिए प्रत्येक पत्र में न्यूनतम ३६ प्रतिशत तथा समष्टि योग में न्यूनतम ४८ प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

अनिवार्य प्रश्नपत्र—

१–शिक्षादर्शन	१००
२–उच्च शिक्षामनोविज्ञान	१००
३–शैक्षिक शोध-विधि एवं सांख्यिकी	१००
४–अध्यापक शिक्षा	१००

५–वैकल्पिक प्रश्नपत्र (इनमें से किसी एक विषय का चयन)—

(क) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	१००
(ख) शैक्षिक प्रशासन एवं पर्यवेक्षण	१००
(ग) शैक्षिक तकनिकी	१००
(घ) कम्प्यूटर सह अनुदेशन एवं अधिगम	१००

६–लघुशोध प्रबन्ध परीक्षा—प्रत्येक छात्र को किसी शैक्षिक विषय पर एक लघु शोध प्रबन्ध लिखना होगा। लघु शोध प्रबन्ध का विषय विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष द्वारा स्वीकृत होगा। निर्देशक की स्वीकृति विभागाध्यक्ष द्वारा दी जायेगी। छात्र उक्त शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय में निर्धारित अध्यादेश के अनुसार प्रस्तुत करेगा। छात्र को अपने उक्त प्रबन्ध की ३ टंकित और सजिल्द प्रतियाँ परीक्षा हेतु प्रस्तुत करनी होंगी।

यह लघु शोध प्रबन्ध छात्र के मौलिक प्रयास का प्रतिफल होना चाहिए। छात्र को अपने इस प्रबन्ध की भूमिका में विषयगत सूचनाओं एवं स्रोतों का निर्देश करना होगा। यह भी निर्दिष्ट करना होगा कि उसने अन्य लेखकों की कृतियों से किस सीमा तक सहायता ली है।

७–मौखिक परीक्षा—प्रत्येक छात्र को एक त्रिसदस्यीय साक्षात्कार समिति के समक्ष उपस्थित होकर मौखिक परीक्षा देनी होगी। मौखिक परीक्षा के प्रश्न शिक्षाचार्य के पाठ्यक्रम एवं लघुशोध प्रबन्ध के विषय से सम्बन्धित होंगे। साक्षात्कार समिति में इस विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष, इसी विभाग के वरिष्ठ अध्यापक तथा किसी अन्य विश्वविद्यालय के शिक्षाविद् आचार्य को मिलाकर गठित होगी। उपर्युक्त तीनों परीक्षकों द्वारा दिये हुए अंकों का मध्यमान ही परीक्षार्थी का प्राप्तांक होगा। शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष इस समिति के संयोजक होंगे।

८–(क) शिक्षाचार्य परीक्षा में अनुत्तीर्ण अथवा असम्मिलित छात्र उसकी अगली परीक्षा में बैठने से वंचित नहीं होंगे। किन्तु ऐसे छात्रों को परीक्षा शुल्क सहित नया आवेदन पत्र प्रस्तुत करना होगा। उनके लिए इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पुनः नियमित छात्र के रूप में नहीं करना होगा और न पुनः नवीन शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होगा। उनके लिए पूर्व सत्र में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्राप्तांक अगली परीक्षा का प्राप्तांक माना जायेगा। परीक्षा में असम्मिलित छात्र उसी अवस्था में अगले वर्ष परीक्षा दे सकेगा जब उसकी उपस्थित ७५ प्रतिशत हो अन्यथा उसे ३ माह का शिक्षण शुल्क तथा ३ माह तक नियमित अध्ययन करना आवश्यक होगा। बिना उपयुक्त कारण के अनुपस्थित छात्र का प्रवेश निरस्त हो जायेगा। उसे अगली परीक्षा देने की अनुमति नहीं होगी।

(ख) शिक्षाचार्य परीक्षा में किसी एक विषय में अनुत्तीर्ण छात्र पुनः एक विषय की परीक्षा अगले सत्र में दे सकता है। यदि छात्र ने सम्बद्ध विषय में न्यूनतम २५ प्रतिशत अंक तथा कुल योग में कम से कम ४८ प्रतिशत अंक प्राप्त किया हो। अन्य अनुत्तीर्ण छात्रों को यह सुविधा नहीं मिलेगी।

९–शिक्षण एवं परीक्षा का माध्यम—संस्कृत अथवा हिन्दी रहेगा।

*

शिक्षाचार्य (M. Ed.)

प्रथम प्रश्न-पत्र

शिक्षादर्शन—

"खण्ड क" ६० अंक

१—शिक्षा दर्शन का अर्थ, उद्देश्य, विषय क्षेत्र, महत्व ।
२—शिक्षा और दर्शन का सम्बन्ध, विशेषतः भारतीय सन्दर्भ में ।
३—दर्शन के विभिन्न सम्प्रदाय-आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद, मानवतावाद ।
४—शिक्षा दर्शन को प्रभावित करने वाले घटक–सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक ।
५—संस्कृति-संस्कृति का अर्थ, प्रकृति, सांस्कृतिक विकास में शिक्षा की भूमिका, शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन ।
६—शिक्षा और समाज—शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया के रूप में, सामाजीकरण और शिक्षा, सामाजिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा ।

"खण्ड ख" ४० अंक

निम्नांकित भारतीय विचारकों की शैक्षिक अवधारणाओं का अध्ययन तथा वर्तमान सन्दर्भ में उनकी उपादेयता—

१- स्वामी दयानन्द ।	२—श्री अरविन्द ।
३—स्वामी विवेकानन्द ।	४—रवीन्द्रनाथ टैगोर ।
५—महात्मा गांधी ।	६—गिजू भाई बधेका ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१०० अंक

उच्च शिक्षा मनोविज्ञान—

१-शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र, अध्ययन की विधियाँ, शिक्षा को मनोविज्ञान की देन (Contribution of Psychology to Education).
२—मानव विकास—संप्रत्यय, सिद्धान्त,अवस्थाएँ, प्रत्येक अवस्था की सामान्य विशेषतायें एवं समस्यायें (विशेषतः किशोरावस्था की), विकास सम्बन्धी पियाजे तथा ब्रूनर के सिद्धान्त ।
३—सीखना—अर्थ, प्रकार, प्रभावित करने वाले कारक ।
सिद्धान्त—अनुकूलन सिद्धान्त—पवलव एवं स्किनर, पुनर्बलन—थार्नडाइक तथा हल, अनुबन्ध सिद्धान्त—गुथरी चिह्न, अधिगम—टोलमैन, क्षेत्र सिद्धान्त—लेविन ।
४—व्यक्तित्व—व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पक्ष—शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक, सामाजिक, व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्त (मनोविश्लेषण) फ्रायड, (ज्ञानात्मक विकास) पियाजे, (व्यक्तित्व सम्बन्धी सिद्धान्त) युंग, आलपोर्ट, एडलर, (समाज मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त) कोलबर्ग, (नैतिक विकास) श्री अरविन्द, Eysenck.

५—व्यक्तिगत भिन्नता—बुद्धि-प्रकृति, सिद्धान्त, परीक्षण। सृजनात्मकता—अर्थ, प्रक्रिया और परीक्षण (टॉरेन्स), विद्यालयीय परिवेश में सृजनात्मकता का विकास एवं प्रशिक्षण, बुद्धि एवं सृजनात्मकता, रुचि, अभिवृत्ति और मूल्य (Interest, attitude and values).

६—चिन्तन तथा तर्क और समस्या समाधान।

७—मानसिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान—मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ, मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ, कार्य तथा उद्देश्य। मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा। छात्रों-अध्यापकों को मानसिक रूप से स्वस्थ बनाये रखने के उपाय।

८—विशिष्ट बालक—प्रतिभाशाली बालक—अर्थ, पहचान, शिक्षा की व्यवस्था।
पिछड़े बालक अर्थ, पहचान, सुधार एवं शिक्षा की व्यवस्था।
अपराधी बालक—अर्थ, पहचान, कारण एवं निवारण।

९—समूह गति विज्ञान, समाजमिति।

शैक्षिक शोध विधि एवं सांख्यिकी

भाग—१ शोध विधि— ६० अंक

१—शैक्षिक शोध—अर्थ, प्रकृति एवं आवश्यकता, (भारत के विशेष सन्दर्भ में महत्व), भारत में शैक्षिक शोध के अभिकल्प।

२—शोध के प्रकार—ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, प्रयोगात्मक, व्यक्तिअध्ययन, सर्वेक्षण, कार्यानुसंधान।

३—शोध की प्ररचनाएँ (Research Designs)—

अन्वेषणात्मक अथवा निरूपणात्मक प्ररचना (Exploratory or Farmulative Design).
वर्णनात्मक और निदानात्मक प्ररचना (Descriptive and Diagnostic Design).
परीक्षणात्मक अथवा प्रायोगिक प्ररचना (ExPerimental Design).

(क) केवल पश्चात् परीक्षण (After only Experiment).
(ख) पूर्व-पश्चात् परीक्षण (Before After Experiment).
(ग) कार्योत्तर परीक्षण (Ex-post facto experiment).

४—शैक्षिक शोध के चरण—
शोध समस्या का चयन।
परिकल्पना।
(क) परिकल्पना का अर्थ एवं महत्व।
(ख) प्रकार।
(ग) निर्माण।
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।
न्यादर्श निर्धारण।

(क) निदर्शन प्रणाली का अर्थ, परिभाषा।
(ख) निदर्शन प्रणाली का महत्व एवं विशेषताएँ।
(ग) निदर्शन प्रणाली की विश्वसनीयता, सावधानी।

प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या।
शोध प्रतिवेदन की प्रस्तुती।

५–शोध के उपकरण—

अच्छे उपकरण की विशेषताएँ।
विश्वसनीयता एवं वैधता का निर्धारण।
प्रश्नावली, साक्षात्कार, निरीक्षण, रेटिंग स्केल, मापनियाँ।
प्रयोग में सावधानियाँ एवं विशेषताएँ।

सांख्यिकी

भाग २—सांख्यिकी— **४० अंक**

१–सांख्यिकी का कार्य एवं महत्व।
२–समंकों का वर्गीकरण, सारणीयन।
३–समंकों का चित्रों द्वारा प्रदर्शन।
एक बिमा चित्र (क) रेखीय चित्र।
(ख) दण्ड चित्र।
द्वि बिमा चित्र—(क) आयत चित्र (Histogram).
(ख) आवृत्ति बहुभुज।
(ग) वर्तुल चित्र (Pie-chart).

चित्र लेख (Pic tographs).

४–केन्द्रीय प्रवृत्ति के प्रभाव—मध्यमान, मध्यिका, बहुलांक—इन मापों की उपयोगिता तथा प्रयोग, कब और कहाँ।

५–विचलन मापन—
चतुर्थांश विचलन।
प्रामाणिक विचलन।
परसेन्टाइल (शतांश) एवं परसेन्टाइल रैंक (शतांश कोटि)।

६–रेखीय सह-सम्बन्ध—
सह-सम्बन्ध का अर्थ एवं प्रकार।
सह-सम्बन्ध गुणांक ज्ञात करने की विधि।

(क) अन्तर क्रम विधि (Rank Difference).
(ख) प्रोडक्ट मोमेन्ट विधि।
सह-सम्बन्ध गुणांक की व्याख्या।

७–सामान्य सम्भाबिता वक्र—
बिशेषताएँ।
प्रयोग।
प्रसामान्यता से विचलन—(क) विषमता (Skeioness).
(ख) ककुदता (Kurtosis).

८–विभिन्न सांख्यिकीय मापों की विश्वसनीयता तथा सार्थकता की परख—
मध्यमान की विश्वसनीयता।
मानक त्रुटि।
दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता।

९–अप्राचल विधियाँ—
टी परीक्षण (T Tests),
काई वर्ग परीक्षण (Chi square test).

१०–प्रायोगिक परिकल्पनाओं का परीक्षण—
निराकरणीय परिकल्पना।
अनुमान में त्रुटियाँ—(क) Type I त्रुटि।
(ख) Type II त्रुटि।
सार्थकता की जाँच–(क) एक पक्षीय (One tailedtest).
(ख) द्वि पक्षीय (Two tailed test).

चतुर्थ प्रश्नपत्र

अध्यापक शिक्षा—

१—अध्यापक शिक्षा - अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व।
उद्देश्य—प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर, उच्च स्तर पर।
अध्यापक शिक्षा का उद्भव एवं बिकास–प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में।

२—अध्यापन व्यवसाय के रूप में–अध्यापकों के विभिन्न स्तरों के लिए व्यावसायिक संगठन और उसकी भूमिका, अध्यापकों का निष्पादन, मूल्यांकन।

३—अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के प्रकार और अभिकरण—
सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा।
पूर्व सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा।
दूरस्थ शिक्षा और अध्यापक शिक्षा।
ओरियन्टेशन और रिफ्रेशर कोर्सेस।

४—अध्यापक शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ—
अध्यापक शिक्षा और अभ्यास विद्यालय।
अध्यापक शिक्षा और अन्य संस्थाएँ।
विशिष्ट विद्यालयों के लिए अध्यापक तैयार करना।

५—शिक्षक प्रशिक्षण से सम्बन्धित संस्थाएँ—
एन० सी० ई० आर०टी०, एन० सी० टी० ई०, आर० सी० ई०, एस० बी० टी० ई०, एस० सी० ई० आर० टी०, डी० आई० ई० टी०।
शिक्षक शिक्षा के सन्दर्भ में उपर्युक्त संस्थाओं की भूमिका एवं योगदान।

६—शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का संगठनात्मक रूप—

७—शिक्षा आयोग १९६४-६६, एन०सी० टी० ई० तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव।

८—अध्यापक प्रशिक्षण के कुछ नवीन विचार—शिक्षण व्यूह-रचना, शिक्षण कौशल, सूक्ष्म-शिक्षण, दल-शिक्षण, वाद-विवाद, सम्मेलन, कार्यशाला, क्षेत्र पर्यटन, संगोष्ठी, समाजोपयोगी कार्य।

९—मुक्त शिक्षण अधिगम के समन्वय का विकास।

सत्रीय कार्य— **२५ अंक**

१—सम्बन्धित अध्यापक द्वारा निर्धारित निरीक्षण तालिका पर किसी विद्यालय में ५ पाठों का निरीक्षण।
२—वास्तविक कक्षा शिक्षण के निरीक्षण द्वारा किसी भी विषय में शिक्षण कौशल का निर्धारण।
३—सूक्ष्म शिक्षण में कौशलों के अन्तर विश्लेषण द्वारा छात्राध्यापकों के विभिन्न समूहों का निर्माण करना।
४—पाठों के निरीक्षण के पश्चात् अध्यापकों को फीडबैक प्रदान करना।
५—दो प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षण अभ्यास से संगठन एवं उसके मूल्यांकन का अध्ययन।

वैकल्पिक

शैक्षिक तकनीकि—(Educational Technology)—

१—शैक्षिक तकनीकि—अर्थ, परिभाषाएँ, विषयवस्तु, इतिहास, प्रकार।
लुम्सडेन का वर्गीकरण।
शैक्षिक तकनीकि के प्रकार।

(क) शिक्षण तकनीकि (Teaching Technology).
(ख) अनुदेशन तकनीकि (Instructional Technology).
(ग) व्यवहार तकनीकि (Behavioural Technology).
(घ) अनुदेशन प्रारूप (Instructional Design).
प्रशिक्षण मनोविज्ञान प्रारूप।
साइबरनेटिक प्रारूप।
प्रणाली उपागम।

२—शिक्षण नीतियाँ Strology युक्तियाँ Devices विधियाँ Teaching Method सूत्र Maxims.

(क) नीतियाँ, युक्तियाँ तथा विधियाँ—
अर्थ एवं विशेषताएँ।
नीतियों, युक्तियों तथा विधियों में अन्तर।
वर्गीकरण।

(ख) सूत्र तथा सिद्धान्त—
अर्थ, परिभाषाएँ तथा वर्गीकरण
आधार तथा आवश्यकताएँ।
महत्वपूर्ण सिद्धान्त।

३—शिक्षण सम्बन्धित प्रत्यय, अवस्थाएँ एवं स्तर

(क) सम्बन्धित प्रत्यय - तुलना एवं अन्तर, शिक्षण, अनुदेशन, अनुकूलन, प्रशिक्षण।
(ख) शिक्षण की अवस्थाएँ -
पूर्व क्रियाशील।
अन्तः क्रियाशील।
उत्तर क्रियाशील :

(ग) शिक्षण के स्तर—
स्मृति।
बोध।
चिन्तन।

४—शिक्षण प्रतिमान—

अर्थ, परिभाषाएँ, जायस् का वर्गीकरण।
विशेषताएँ एवं घटक।

प्रकार—ग्लेसर टर्नर, टाबा, आसुबेल, स्किनर, ब्रूनर, ब्लूम, पियाजे, रोने तथा फ्लेन्डर का योगदान एवं उनके शिक्षण प्रतिमान।

५—शिक्षण कौशल एवं सूक्ष्म शिक्षण—
कौशल—अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार।
समन्वयन तथा उसकी विधियाँ।

सूक्ष्म शिक्षण- महत्व, चक्र, प्रविधि।

६—वैयक्तिक शिक्षण—प्रयोजन, महत्व।
अभिक्रमित अनुदेशन।
कम्प्यूटर सह-अनुदेशन।
पी० एस० आई०) व्यक्तिगत अनुदेशन प्रणाली।

७—शिक्षण के सहायक उपकरण—

महत्व, उपयोगिता।

सहायक उपकरणों का वर्गीकरण।

डेल का अनुभव कोन।

उपयुक्त सामग्री का चयन।

८—शिक्षण का नियन्त्रण—

मूल्यांकन तथा मूल्यांकन के उपकरण।

अच्छे मूल्यांकन उपकरण के गुण।

प्रमापीकृत परीक्षण।

अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण।

प्रतिमान सन्दर्भ तथा मानदण्ड सन्दर्भ परीक्षण।

९—शिक्षा में नवाचार—

सम्प्रेषण—संकल्पना, सिद्धान्त, बाधाएँ, प्रकार।

दूरवर्ती शिक्षा।

यथार्थवत् शिक्षा।

इण्टरनेट द्वारा शिक्षण का प्रारूप।

प्रायोगिक कार्य— २५ अंक

१—(क) माध्यमिक स्तर के स्कूली विषय की किसी इकाई हेतु अभिक्रमित सामग्री का निर्माण।

अथवा

(ख) माध्यमिक स्तर के स्कूली विषय की किसी इकाई के परीक्षण हेतु प्रमापीकृत परीक्षण का निर्माण।

२—बी० एस० ब्लूम, स्कीनर, आसुबेल, ग्लेसर के शिक्षण तकनीकि के क्षेत्र में योगदान (किन्हीं दो पर निबंध)।

३—फ्लेंडर की अन्तःक्रिया प्रणाली के आधार पर किन्हीं पाँच छात्राध्यापकों का मूल्यांकन।

वैकल्पिक

Computer Assisted Teaching and Learning.

Theory–60

1–INTRODUCTION.

Brief History of Computers.

Teaching machines.

Basic technological principles underlying Computer Assisted Instruction.

Programmed Learning and Programmed instruction.

Computer in Indian School.

2–COMMUNICATON.

Principles of Communication.

Models of Communication.

Theories of Communication.

Types—

Verbal/Nonverbal.
Meta Communication.
Satellite Communication.
E mail & Internet.

3-LANGUAGE TEACHING.

Language teaching through Computer.
CALL & CALT.
Programs in India.

4-C. A. I. COMPUTER ASSISTED INSTRUCTION.

Basic concepts.
Types—Game, Drill, Simulation, Yuided Discovery.
Stages of Development.
Designing & Package.
Relevance of Graphics in tutorial Package.
Evaluation of the Package.

5-COMPUTER HARDWARE.

INPUT DEVICES.
OUTPUT DEVICES
C. P. U., MEMORY (RAM, ROM) STORAGE CLOCK SPEED etc.

6-COMPUTER SOFTWARES FOR ACADEMICTANS.

Iutroduction to Files, Directiones & Commands.
Introduction to WINDOWS.
Introduction to M. S. WORD –wordprocessing.
Introduction to M. S. POWERPOINT.
Creating slids presentations tutorials and use of cliparts.
Introduction to MS EXCEL.
Mathematical and Statistical evaluation and graphical representation of date.
Introduction to M. S. PAINT BRUSH—Simple diagrams.
Introduction to Multimedia—Imaging, morphing and Animation.
Introduction to Net working.
LAN (Local Ariea Networking).
WAN (Wide Ariea Networking)
INTERNET.

PRACTICALS **40 Marks.**

1-Creating Files, Directories, Editing in MS. DOS.
2-Formatting, Page desining, Inserting clipart, Word Art.
3-Creating slide shows, Inserting sound, Pictures, Animation, Video clips.

4—Enterding Nata in EXCEL—Mathematical calculatians.
5—Creating Pie-charts, barcharts, histograms.
6—Simple Disgrams and charts though PAIN BRUSH.
7—Simple Imaging, MORPHINA and Animation.
8—Creating a brief C. A. I. Program.

पंचम प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक) **७५ अंक**

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन—

१—निर्देशन का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, आवश्यकता, उद्देश्य, सिद्धान्त एवं मान्यताएँ।
२—निर्देशन के प्रतिमान आवश्यकता प्रारम्भिक प्रतिमान, कालान्तर प्रतिमान तथा समकालीन प्रतिमान।
३—निर्देशन सेवाओं का संगठन—शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए निर्देशन।
४—निर्देशन के प्रकार—(१) शैक्षिक निर्देशन। (२) व्यावसायिक निर्देशन, वैयक्तिक निर्देशन।
५—विशेष समूहों के लिए निर्देशन -प्रतिभाशाली व्यक्ति समूह, मन्दबुद्धि व्यक्ति समूह, अपङ्ग व्यक्ति समूह।
६—वैयक्तिक एवं सामूहिक परामर्श—परामर्श की आवश्यकता, परामर्श की विधियाँ, परामर्श के सिद्धान्त, मनःचिकित्सा एवं परामर्श की प्रक्रिया तथा सावधानियाँ।
७—परामर्शदाता के कार्य।
८—निर्देशन सेवाएँ—व्यावसायिक सेवा सूचना, विद्यालय एवं नियोजन सेवा।

प्रायोगिक एवं सत्रीय कार्य **२५ अंक**

१—(क) प्रत्येक छात्र को छात्रों के छोटे समूह पर निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग करना होगा तथा उनसे सम्बन्धित अभिलेख तैयार करना होगा—

१—बुद्धि परीक्षण।
२—सामूहिक उपलब्धि परीक्षण।
३—व्यक्तित्व परीक्षण।
४—रुचि परीक्षण।

(ख) किसी एक छात्र के जीवन वृत्त को तयार करना।

२—किसी नगर या ग्रामीण क्षेत्र का व्यवसाय सम्बन्धी सर्वेक्षण।

शैक्षिक प्रशासन और पर्यवेक्षण **७५ अंक**

भाग—१

शैक्षिक प्रशासन के सिद्धान्त, समस्याएँ और प्रयोजन उसका विस्तार और प्रकार, शैक्षिक प्रशासन को प्रभावित करने वाले घटक। शैक्षिक प्रशासन के विविध पक्ष—राजनीतिक समानुरूपता, सांस्कृतिक एकता, दक्षता, तथा शैक्षिक प्रशासन में समायोजन।

शैक्षिक पर्यवेक्षण, उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा का वित्तीय प्रबन्धन

भाग—२

पर्यवेक्षण-पर्यवेक्षणके सिद्धान्त, प्रकार, समस्याएँ तथा उसकी प्रक्रियाएँ, उसको प्रभावशालिता का मूल्यांकन। निरीक्षण का आयोजन, निरीक्षकों और अध्यापकों के सम्बन्ध।

प्रायोगिक कार्य ४०अंक

भाग—३

टिप्पणी—(१) इस पत्र को लेने वाले छात्र को माध्यमिक विद्यालय, पूर्वमध्यमा पाठशाला अथवा उत्तरमध्यमा पाठशाला में अध्यापित होने वाले दो विषयों में कम से कम २० पाठों का निरीक्षण अनिवार्य रूप से करना होगा।

(२) प्रत्येक छात्र को किसी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जाकर निम्न पक्षों पर संस्था सम्बन्धी अपने निरीक्षण का प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होगा।

(क) अधिकारी वर्ग।
(ख) भवन-इसका परिसर तथा साज सज्जा।
(ग) संस्था के अभिलेख तथा पंजिकायें।
(घ) कर्मशालायें।
(ङ) पुस्तकालय।
(च) छात्रावास और उसका प्रबन्ध।
(छ) खेल के मैदान—खेल-कूद के लिए उसकी व्यवस्था।

३-प्रत्येक छात्र को निम्न पक्षों पर किसी एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के आय व्यय का अध्ययन करना होगा—

(क) आय के मूल स्रोत।
(ख) सम्पूर्ण आय में प्रत्येक स्रोत से प्राप्त धनराशि का प्रतिशत।
(ग) व्यय के विभिन्न प्रकरण।
(घ) शासकीय संस्थानों से समकक्षता रखने वाली संस्थाओं में शुल्क की धनराशि।
(ङ) संस्थाओं के विशिष्ट कोष यथा - खेलकूद, स्याही, भवन, अध्यापकों का पारस्परिक सहायता कोष तथा परीक्षा कोष।
(च) अध्यापकों का वेतनमान तथा वेतन वृद्धियाँ।
(छ) निम्न वर्ग के कर्मचारियों के वेतन।
(ज) अध्यापकों तथा कर्मचारियों को प्राप्य मँहगाई भत्ते तथा अन्य सुविधायें।
(झ) ऋणात्मक आय-व्यय की स्थिति में सन्तुलन।
(ञ) अधिशेष के (यदि कोई हो तो) उपयोग सम्बन्धी सुझाव।
(ट) आय-व्यय सम्बन्धी कोई अन्य बात।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

प्रथम प्रश्न-पत्र

१—नवीन शिक्षादर्शन—के० पी० पाण्डेय, अमिताश प्रकाशन, दिल्ली, १९८८।

२—शिक्षादर्शन—रामसकल पाण्डेय, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९८३।

३—इन्ट्रोडक्शन टु फिलासफी आफ एजुकेशन—जार्ज एफ० नेलर, जान बिली एण्ड सन्स, १९७१।

४—माडर्न फिलासफीज आफ एजुकेशन—जान० एस० ब्रुबेकर, टाटा मैग्राहिल, १९८०।

५—सोसियो-फिलासिफिकल एप्रोच टु एजुकेशन—बी० आर० तनेजा, एटलांटिक पब्लि०, दिल्ली, १९७९।

६—फिलासफी आफ इण्डियन एजुकेशन एम० बर्मा, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, १९६९।

७—पाजिटिव रिलेटिविज्म—एन० इमरजेन्ट एजुकेशनल फिलासफी। मारिस एल० बिग्गी, हारपर रोड, १९७१।

८—एजुकेशन ऐन इनवेस्टमेन्ट—डा० बलजीत सिंह (स०) मीनाक्षी, प्रकाशन, मेरठ, १९८४।

९—डीस्कूलिंग सोसाइटी—इवान इलिच, १९७३।

१०—परस्पेक्टिब्ज इन सोशल फाउण्डेसन्स आफ एजुकेशन—के० पी० पाण्डेय (स०) अमिताश प्रकाशन, दिल्ली, १९८८।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

१—दी साइकालाजी आफ लर्निंग-माडर्न आर० क्रास परगेमीन प्रेस, १९७४।

२—साइकालाजिकल फाउण्डेसन्स आफ एजुकेशन—एन० के० दत्त, दोआबा हाउस, १९१४।

३—थ्योरीज आफ लर्निंग-ह्विलगर्ड तथा बोयर, एदबुल्टन सेन्चूरी क्राफ्ट, १९७१।

४ द साइकालाजी आफ लर्निंग, हल्ज, डीज तथा इगेथ (अनुदित) एल० बी० त्रिपाठी (चतुर्थ संस्करण टाटा मैक्ग्राहिल), १९८२।

५—एजुकेशनल साइकालाजी—फ्रेडरिक जे० येक्डानाल्ड-वाडसवर्थ पं० कम्पनी, १९६६।

६—ह्यूमन इन्टेलीजेन्स, इट्स नेचर एण्ड असेसमेण्ट—एच० जे० बुचर, मैथ्यून एण्ड कम्पनी, १९६८।

७—प्राब्लम चिल्ड्रेन, उदयशंकर, बेस्ड आन केस स्टडी आफ इण्डियन चिल्ड्रेन, आत्माराम एण्ड सन्स, १९८७।

८—एजुकेशनल साइकालाजी —सी० एल० कुन्डू, स्टर्लिंग पब्लिसर्स, १९८३।

९— एडवांस्ड एजुकेशनल साइकालाजी फार टीचर्स—के० पी० पाण्डेय, कोनार्क पब्लिसर्स, १९८८।

१० नवीन शिक्षा मनोविज्ञान के० पी० पाण्डेय, अमिताश प्रकाशन, १९८७।

११—शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार—इन्दू दूबे, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकदमी, जयपुर, १९७१।

तृतीय प्रश्न-पत्र

१—कण्डक्टिंग एजुकेशनल रिसर्च ब्रूस डब्ल्यू टेकमैन (द्वितीय संस्करण हारकोर्ट ब्रस, १९८७।

२—एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल रिसर्च, एम० डब्ल्यू० ट्रेवर्स (तृतीय संस्करण) द मैकमिलन कम्पनी, १९८१।

३—ऐन इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशनल एण्ड साइकोलाजिकल रिसर्च, डॉ० एम० वर्मा एशिया पब्लिशिंग हाउस, १९६५।

४ फाउण्डेसन्स आफ बिहैवियरल रिसर्च—फ्रेन्ड एन० कालिगर, सुरजीत पब्लिकेशन कमलानगर, दिल्ली, १९७३।

५—स्टेटिस्टिकल एनेलिसिस इन साइकालाजी एण्ड एजुकेशन, जार्ज ए० फर्ग्यूसन (पाचवां संस्करण) मेग्राहिल इन्टरनेशनल बुक कम्पनी, १९८१।

६—रिसर्च मेथड्स इन एजुकेशन—लूबिस कोइन तथा लारेन्स मैनियन, कूथ हेल्थ, लन्दन, १९८०।

७—अण्डरस्टैंडिंग एजुकेशनल रिसर्च, वान डलेन, मेग्राहिल बु०क० (तृतीय संस्करण), १९७३।

८—एक्शन रिसर्च टू इम्प्रूभ एजुकेशनल प्रेक्टिसेज—स्टिपेन एम० कोरी, रिसर्च कालेज कोलम्बिया, १९५३।

९—फण्डामेन्टल्स आफ एजुकेशनल रिसर्च—डॉ० के० पी० पाण्डेय, अमिताश प्रकाशन, १९८५।

१०—शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान—डॉ०के०पी० पाण्डेय, अमिताश प्रकाशन, तृतीय संस्करण, १९८८।

११—मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी—डॉ० के० पी० पाण्डेय, दुआबा हाउस तृतीय परिवर्द्धित संस्करण १९८५।

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

अध्यापक शिक्षा—

1-Chaurasia, G., New Era in Teacher Education, Sterling Publishers (P) Ltd. Mori Gate, Delhi, 1967.

2-Cottrel, D. P.,—Teacher Education for a Free People American Association of Colleges for Teacher Education New York, 1966.

3. Desai, D. M.–New Directions in the Education of Indian Teachers, Faculty of Education and Psychology, M. S. University, Baroda, 1970.
4. Dikshit, S.S.–Teacher Education in Moders Democracies. Stealing Publishers, Jullundhar, 1969.
5. Govt, of India—Report on the Education Commission (Chapters on Teacher Education) 1964-66.
6. Passi, B. K.—Becoming Better Teacher, Sahitya Mundralays, Ahemdabad, 1976.
7. Gowda, A. C. Deve (Ed.)—Symposium on Teacher Education, Indian Publications, Ambala Cantt, 1964.
8. Trivedi, S.S.–Education and Educators, Balgovind, Prakashan Ahemdabad, 1970.
9. Mukherjee, S. N. (Ed.)—Education of Teachers in India, (Vol, I & II) S. Chand and Company, Delhi, 1969.
10. Alen and Rayn—Micro teaching.
11. Falanders, N. Analysis class room Behaviour.
12. UNESCO—The Education of Teachers in England, France and U. S.A.
13. Mehta and Joshi–Teacher Education (Vol. I & II) in Hindi Rajasthan Academy.

पंचम प्रश्न-पत्र

१—ऐटकिन्सन जे० एण्ड ऐटकिन्सन—मार्डन टीचिंग ऐड्स मेकडाबल एण्ड इवान्स।

२—अंशुबल डेविड—साइकालाजी आफ मीनिंगफुल बिहेभियर लर्निंग एण्ड इन्टच्यूशन, न्यू यार्क।

३—बासू सी० के० ऐण्ड रामचन्द्रन के०—एजुकेशनल टेक्नोलाजी इन इण्डिया, एन० सी० पी० टी०, न्यू दिल्ली।

४—भट्ट, जे० एम०—एजुकेशन फार मैसेस फार मास मीडिया, पेपर प्रजेन्टेड ऐट एनुअल कांफ्रेन्स आफ आई० आई० ए० ई० टी० वल्लभ विद्यासागर, जर्मनी।

५—ब्रस ज्वायस ऐण्ड मार्शलवेल—माडल्स आफ टीचिंग, प्रेन्टिस हाल, ऐंगलउड क्लिफटन, न्यू दिल्ली।

६—चोहान एस० एस०—इनवोवेशन्स इन टीचिंग लर्निंग प्रोसेस, विकास पब्लिसिंग प्राइवेट लिमिटेड, १९८१।